Dr. Madan Paswan, History

Class: B.A. Part-I (Hons.) I Paper.

Chap.: Unit-I (IV th) Vedic Civilization – Regvedic...

Continue... (1)

Lecture No. 44

Date- 29.04.2020

from page no. 1-2.

नदियों के नाम : तब और अब	
प्राचीन नाम	आज का नाम
1. कुभा	काबुल
2. सुवास्तु	स्वात
3. क्रुमु	कुर्रम
4. गोमती	गोमल
5. सिन्धु	सिंध
6. सुषोमा	सोहन
7. वितस्ता	झेलम
8. असिक्नी	चिनाब
9. मरुद्वृधा	मरुवर्दन
10. परुष्णी	रावी
11. विपाशा	व्यास
12. शतुद्रि	सतलज
13. सरस्वती / दृषद्वती	घग्घर / रक्षी / चितंग
14. सदानीरा	गंडक

⊙ वैदिक समाज में तीन ऋणों का वर्णन हैं :-

(क) ऋषि ऋण – प्राचीन ज्ञान, विज्ञान व साहित्य के प्रति कर्तव्य.

(ख) पितृ ऋण – पूर्वजों के प्रति कर्तव्य.

(ग) देव ऋण – देवताओं व भौतिक शक्तियों के प्रति दायित्व।

⊙ ऋग्वेद में महत्वपूर्ण शब्द का उल्लेख हुआ हैं :-

1. राज्य	—	1 बार
2. विश	—	170 बार
3. जन	—	275 बार
4. गंगा	—	1 बार
5. शूद्र	—	1 बार
6. समिति	—	9 बार
7. सभा	—	8 बार
8. यमुना	—	3 बार
9. कृषि	—	24 बार

(Contd...)

दूसरे से सातवें खण्ड तक पहले लिखा गया है। पहला और 10वाँ खण्ड नवीनतम लगता है। ऋग्वेद में कई चीजें ईरानी भाषा के सबसे पुराने ग्रन्थ अवेस्ता से मिलती-जुलती हैं। दोनों ग्रन्थों में कई देवताओं के लिए, यहाँ तक कि सामाजिक वर्गों के लिए भी इसी शब्द का उपयोग किया जाता है।

प्रसिद्ध भारतीय विद्वान बाल गंगाधर तिलक ने अपनी पुस्तक- 'The Arctic Home of the Aryans' में यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि आर्यों का मूल निवास स्थान आर्कटिक प्रदेश या उत्तरी ध्रुव क्षेत्र था। उनका यह निष्कर्ष ऋग्वेद और ईरानी ग्रंथ अवेस्ता में वर्णित भौगोलिक साक्ष्यों पर आधारित है। तिलक के अनुसार इस क्षेत्र में भयंकर हिमपात होता था तथा 6 महीने का दिन और 6 महीने की रात होती थी जिसका वर्णन अवेस्ता में भी मिलता है। इन्हीं परिस्थितियों से बाध्य होकर करीब आठ हजार वर्ष पूर्व आर्यों को यह प्रदेश छोड़ना पड़ा। अवेस्ता में इस बात का वर्णन आया है कि अहुरमज्द ने सबसे पहले 'ऐर्यान वेइजो' नामक प्रदेश की रचना की, जहाँ 10 महीने की लम्बी शीत ऋतु तथा मात्र दो महीने की ग्रीष्म ऋतु होती थी। तिलक का यह भी मत है कि ऋग्वेद में लम्बी ऊषाकाल का वर्णन मिलता है। ऐसी ऊषा केवल उत्तरी ध्रुव में ही हो सकती है।

परन्तु अधिकांश इतिहासकार बाल गंगाधर तिलक द्वारा प्रतिपादित इन मतों को स्वीकार नहीं करते। यदि आर्य उत्तरी ध्रुव को अपना आदि देश मानते होते तो वे सप्तसैंधव प्रदेश को 'देवकृतयोनि' नहीं कहते। इसके साथ यह भी उल्लेखनीय है कि ऋग्वेद में स्पष्ट रूप से उत्तरी ध्रुव का उल्लेख नहीं किया गया है। केवल हिमपात के उल्लेख के आधार पर आर्यों के मूल निवास स्थान का समाधान नहीं किया जा सकता।

(Continue...)

— Lecture No. (43) Forty three.
Date- 28/04/2020.
Dr. Madan Paswan, History.

वैदिक सभ्यता : ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई०पू०)

वैदिक साहित्य द्वारा भारतीय इतिहास के जिस युग का ज्ञान होता है, उसे वैदिक काल कहते हैं। वैदिककालीन सभ्यता का उत्कर्ष सिन्धु सभ्यता के विनाश के पश्चात् हुआ। कुछ विद्वानों के अनुसार आर्यों के आक्रमण से ही सिन्धु सभ्यता का अन्त हुआ। वैदिक सभ्यता के निर्माता अपने को आर्य तथा अपने शत्रुओं को दास कहते थे। दास लोग काले रंग के लिंगपूजक और चिपटी नाक वाले थे। उनकी बोली समझ में नहीं आती थी। वे यज्ञ नहीं करते थे, उनके पास पुर थे, उनका सरदार शाम्बर पहाड़ की 100 पुरों का स्वामी था। मोहनजोदड़ो को छोड़कर कहीं भी सिन्धु घाटी सभ्यता के नगरों के अवशेषों में हिंसा और आक्रमण के कोई संकेत नहीं मिलते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता का अन्त लगभग 1750 ई० पू० से 1500 ई०पू० के आस-पास माना जाता है।

आर्यों का विस्तार

भारत में हम आर्यों को ऋग्वेद से जानते हैं। इस ग्रन्थ में आर्य शब्द 36 बार आए हैं और सामान्यतः एक सांस्कृतिक समुदाय का परिचायक है। जिनकी भाषा इण्डो-आर्यन है। शुरू-शुरू में आर्य, पूर्वी अफगानिस्तान, उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रान्त, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किनारे वाले भौगोलिक क्षेत्र में रहते थे। ऋग्वेद में अफगानिस्तान की कुंभा और अपनी पाँच शाखाओं सहित सिन्धु नदी जैसी कुछ नदियों का भी उल्लेख है। सिन्धु नदी इण्डस सेसीधे-सीधे जुड़ी हुई हैऔर आर्यों के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण नदी है, जिसको हमें ऋग्वेद में बार-बार उल्लेख मिलता है। एक और नदी है सरस्वती, जिसे ऋग्वेद में नदीतमा या सर्वश्रेष्ठ नदी कहा गया है। यह हरियाणा और राजस्थान में घग्गर-हकरा के साथ पहचानी जाती है, लेकिन इसके ऋग्वैदिक वर्णन से पता-चलता है कि यह दक्षिण अफगानिस्तान में अवेस्तन नदी हरख्वाती है या वर्तमान हेलमन्द नदी है। जहाँ से सरस्वती नाम भारत में आया था। पूरा क्षेत्र जहाँ भारतीय उपमहाद्वीप में आर्य सबसे पहले बसे, उन्हें सात नदियों की भूमि कहा जाता है।

ऋग्वेद भारोपीय भाषाओं का प्राचीनतम ग्रंथ है। यह संस्कृत में लिखा है, लेकिन इसमें ढेर सारे मुण्डा एवं द्रविड़ शब्द भी हैं। सम्भवतः ये शब्द हड़प्पा भाषाओं के माध्यम से ऋग्वेद तक पहुँचे। यह अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण एवं अन्य देवताओं की विभिन्न ऋषि व कवि परिवारों द्वारा की गई प्रार्थनाओं का एक संग्रह है। इसमें दस मण्डल या खण्ड हैं, जिनमें

(Contd---)

⊙ इतिहासकारों के अनुसार, कहाँ से आर्य आये लोग :-

सप्तसैंधव प्रदेश	—	डॉ० अविनाश चन्द्र
ब्रह्मर्षि देश	—	पं० गंगानाथ झा
मध्य प्रदेश	—	डॉ० राजबली पाण्डेय
कश्मीर	—	श्री एल० डी० कल्ल
देविका प्रदेश (मुल्तान)	—	श्री डी० एस० त्रिवेदी
उत्तरी ध्रुव या अर्न्टाकटिका	—	बाल गंगाधर तिलक
हंगरी या डेन्यूब नदी	—	गाईल्स
जर्मनी	—	पेन्का
दक्षिणी रूस	—	नेहरिंग
बैक्ट्रिया	—	जे० जी० रोड्स
कैस्पियन सागर	—	प्रो० सेअस
पामीर के पठार	—	मैलर महोदय
मध्य एशिया	—	मैक्समूलर
मेसोपोटामिया या सीरिया	—	एडवर्ड मैलर
किर्गिज का स्टेप्स	—	वैन्डस्टीन

⊙ वैदिक प्राचीनकाल के शिक्षकों के नाम :-

आचार्य — शिक्षा प्रदान करने वाले की सर्वोच्च पदवी.
प्रवक्ता — आचार्य से ठीक नीचे का पद.
श्रोतिय — वैदिक साहित्य को याद करने तथा कराने वाला शिक्षक।
अध्यापक — लौकिक साहित्य की शिक्षा प्रदान करने वाला शिक्षक.

Continue ...

— Lecture No. 44.
Date — 29.04.2020.
Dr. Madan Paswan, History